## विनाक 3 ग्राप्रेस, 1984

सं भी.षि |सोमीपत|229-83|13947.---पूकि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं विहरियाणा स्टेट फैडरेशन धाफ कन्जूमजं को-माप्रेटिव होल सेल स्टीजं लिंग, कान्छेड, चण्डीएड, के श्रमिक भी शाजपाल सिंह तथा उसके प्रवन्तकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामसे में कोई भौद्योगिक दिवाद है;

भीर पृंकि हरियामा के राज्यपास विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्विच्ट करना बांछनीय समझते हैं :

इसलिये, भव, मौबोगिक विवाद मिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं क्रियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपास इस के द्वारा सरकारी मिन्नियम सं 9841-1-जंग/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ प्रदेश सरकारी मिन्नियम की आप प्रदेश सरकारी मिन्नियम की आप 7 के मिन्नियम की आप 7 के मिन्नियम स्थायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिल्ला मामला क्यायिकियम हैतु निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :---

क्या भी राज पाल सिंह की सेवाफों का समापन न्यायोखित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

र्त.भो.वि-|हिसार/13954----पूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. नियंत्रक हरियाणा राज्य परिवहन, घण्डीगढ़ 2. जनरल मैनेकर हरियाणा राज्य परिवहन सिरसा, के श्रमिक श्री राम ऋषि तथा उसके प्रवन्त्रकों के बीच इसमें इसके बाद सिकित मामले में कोई भोडोगिक विवाद है;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपास विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, भीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गितियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रक्षिश्चला सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवन्यर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.प्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रप्रितियम की घारा 7 के प्रधीन मठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनियम ही विविद्ध करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री राम ऋषि की सेवाधों का समापन न्यायोधित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.भो.बि./हिसाप/18-84/13962.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रबन्धक निदेशक दी मच्छी दंबदासी को-माप्रेटिय कम प्रोसेंसिंग सो० लि., मण्डी हदवासी, सिरसा, केश्रमिक भी शिव शंकर तथा उसके प्रवन्धकों केबीच इसमें इसके बाद सिम्बिस मामले में कोई भौद्योगिक निवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विचाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, मन, भीकोगिक विवाद मधिनियम, 1947, की धारा 10 की स्पष्टारा (1) के बच्छ (ग) द्वारा जवान की गईं सिंसियों का प्रयोग करते हुए, हरियाण के राज्यपान इस के द्वारा सरकारी भिष्टमूचना सं. 9641—1—भन—70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी मधिसूचना सं. 3864—ए.एस.मो. (ई) श्रम—70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा स्वतः मधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित भन न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामसा न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री शिव शंकर की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

र्षं.मो.वि./सोनीपत/18-84/13969.— वृष्टि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि दी हरियाणा स्टेट फैटरेशन झाफ क न्जूमर्ज की-माप्रेटिव होलसेस स्टोर्ज लि., (काकंट), पण्डीगढ़ के समिक श्री बेद सिंह तथा उसके प्रसन्तकों के बीच इसमें इसके बीद सिवित मामले में कोई भौडोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं 📢

रिस्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाना के राज्यपास इसके हारा सरकारी श्रीक्षण्यासं, 9841-1-वन-70/32573, दिलांच 6 नवस्वर,

1970 के साथ पिटत सरकारी समिक्षवना में. 3864-ए.एस.मो. (ई) अम-70/13648, दिनोच 8 मई, 1970 द्वारा चक्त प्रविनियम की बारा 7 के प्रवीन गठिव अस न्यायालय, रोह्बच, को विवादबस्त या उत्तरे सुसंगत या उत्तरे सम्यन्वित नीचे लिखा मामसा न्यायिनग्रंथ हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवाद तो तथा अमिक के मीच या तो विवादबस्त मामला, है या उन्त विवाद से पुसंगत या सम्यन्वित मामसा है:----

क्या श्री बेद सिंह की सेवाश्रों का समापत न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि कहीं, तो वह किस राह्य का हकदार है ?

## **दिनां**क 4 मप्रैस, 1984

यं.मो.वि./रोहतक/146-84/14050.~-चूंकि दुरियाणा के राज्यपाल की दाये है कि म० वेसिक फार्मा एम.माई.ई. इहादुरतद (रोहतक). के अभिक जी रामेस्टर तथा उसके प्रवस्त्रकों है वीच इसनें इसके बाद लिखित मामने में कोई मोकोपिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्जय हेतु निविश्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

हुँ इस लिए, सब, मौद्योगिक विवाद प्रवितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यवाल इसके हारा सरकारी प्रविद्युवना सं. 9641-1-भम-70/32573, दिनांक 6 मदम्बर, 1970 के साथ पठित खरकारी विविद्युवना सं. 3864-ए. एस.प्रो. (ई) मम-70/1348, दिनाक 8 मई, 1970 हारा एक्त प्रवितियम की धारा 7 के प्रधीन गठित जम न्यायालय, रोह्तक, को विवादकस्त या उससे सुसंगत, या सम्मन्धित नीचे विज्ञा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा अभिक्ष के बीच या तो विवादक्त मामता है या उनत विवाद से सुसंगत वा सम्मन्धित मामला है:— र

क्या श्री रामेश्वर की सेवाओं का समापन न्यायोजित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हककार है ?

## ्रैंदिनोक 5 मप्रैल, 1984

सं. ब्रो.वि | हितार | 13-83 | 14230 -- वृंति हरियामा के राज्यपाल की राये हैं कि मै. दी हिसार डिस्ट्रिक्ट सैन्ट्रल की-प्राप्तटित जैंक कि., जैंक रोड, हितार, के धानक श्री किजाब सिंह तया उसके प्रबत्वकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामसे में कोई श्रीक्षोविक विवाद हैं;

घौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेसू निविष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, भव, भी सोगक विवाद प्रधितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई सिन्तर्यों का प्रयोग करते हुए, हिरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 महम्बर, 1970 के साथ पठिच सर हुए रे प्रिश्नमूचना सं. 3864-ए.एस.घो. (ई) अम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 हारा उक्त प्रक्रिक्षियक की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिक हैतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा धानक के बीच या तो विवाद प्रस्त बाबला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री क्रिताव सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है ?

सं. मो.वि./एफ. डी./64-84/14237---वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० मैचलेस रवड़, ब्लाट नं० 2, इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, फरीदाबाद के श्रमिक क्ष्मीमित गान्ति देवी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीकोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव. श्रीदोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा श्रवान की गई संकितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7(क) के घधीन भीदोगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादप्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्रीमती शान्ति देवी की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है 📜